सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
समग्र विकास की ओर अग्रसर

"आलेख"

'संपूर्णा में है यह संभावना, संभावना में है सामर्थ और सामर्थ से होगा सबका सशक्तिकरण'

—डॉ. शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

वर्ष 2020 देश को एक ऐसे धरातल पर ले आया है जहां से हमें पुनः संभावनाओं को तलाशना होगा। बहुत सीधे तौर पर दिखाई दे रहा है कि आने वाला समय बीते हुए समय की भांति नहीं रहने वाला है। इस डिजिटल युग में हम पुनः लोकल और वस्तु विनिमय (बार्टर) युग में आ पहुंचे हैं।

संपूर्णा द्वारा सभी बहनों और भाइयों को इस लेख के माध्यम से मैं एक सुझाव देती हूं, कि आप सभी किसी न किसी कार्य में सक्षम हैं। कोई बहन खाना अच्छा बना सकती है, कोई सजावट अच्छी करती है, कोई घरेलू काम अच्छा करती है, कोई पटरा बनाना जानती है, कोई उत्तम अलमारी बनाना जानती है, तो कोई महिला बीज एकत्र करना जानती है। आप किसी ना किसी कार्य में निपुण हैं।

संपूर्णा कई वर्षों से पुराने कपड़ों से थैले इत्यादि बनाने का कार्य कर रही है।

मैं आप सब से अनुरोध करती हूं कि आप भी घर में ही बैठे—बैठे कोई ना कोई ऐसी चीज अवश्य तैयार करें, जिसमें आप निपुण हों। संपूर्णा आपको जीविकापार्जन लिए लोकल बाजार उपलब्ध कराएगी। आप भी अपनी हाथ की बनी वस्तुओं के विक्रय के लिए संपूर्णा से संपर्क कर सकते हैं। हमारी कोशिश रहेगी कि हम तुरंत आपको एक बाजार दें ताकि आपका सामान सबसे पहले कहीं और नहीं यहीं रोहिणी में ही बिक जाए।

आने वाला समय बता रहा है कि कोरोना वायरस के संक्रमण से बचने की चिंता हमको स्वयं ही करनी पड़ेगी। इस शत्रु को समझदारी से पराजित करना होगा। संकट के इस आपदा काल में एक भी परिवार ना उजड़े। यह ध्यान देना होगा कि प्रत्येक को भोजन मिले और साथ ही साथ सम्मान पूर्वक जीवनयापन के लिए कारोबार मिले। इस समय यह बहुत बड़ी आवश्यकता है।

हम सब आजकल घरों में बैठे हैं। क्यों नहीं हम अपनी–अपनी निपुणता का सदुपयोग करके किसी ना किसी कार्य में निपुण होकर पहले की तरह अपने लोकल सिस्टम को मजबूत करें। मैं आपको बताना चाहूंगी कि 15 वर्ष पूर्व संपूर्णा के मेलों में एक महिला गोलगप्पे बनाकर लाती थी, एक महिला मंगोड़ी पापड़ बना कर लाती थी, तो एक गले में सजने वाली माला बनाकर लाती थी, सबसे पहले यदि किसी का सामान बिकता था तो मेरी इन्हीं बहनों का सबसे पहले सामान बिक जाया करता था। क्योंकि इन सामानों की गुणवत्ता/क्वालिटी सबसे अच्छी और घर जैसी होती थी। आजकल पुनः छोटी–छोटी कलाओं को जीवित करके हम भारत को आगे बढ़ा सकते हैं।

मैं यहां पर यह भी कहना चाहूंगी कि आप यदि अन्य काम भी करना चाहते हैं या आपके मन में कोई सुंदर विचार है जिससे किसी का घर चल सके तो आप मेरे व्हाट्सएप नंबर 9868104665 पर अपने उत्तम विचार भेज सकते हैं। हम उन विचारों को पढ़कर, समझ कर, चर्चा करके संपूर्णा द्वारा चलाए जा रहे स्किल प्रोजेक्ट में शामिल करेंगे।

यह आलेख एक बीज आरोपित करने का है। अब आप इस बीज से कैसे आगे बढ़ेंगे और अपने उत्तम विचारों से और इस लेख के माध्यम से कैसे जीविकोपार्जन करेंगे?

————————————————————————————